चुनाव सुधारों में छिपा है इस मर्ज का इलाज

गौरीशंकर राजहंस

जब से गत 16 दिसंबर की बीभत्स बलात्कार की घटना हुई है सारे देश का सिर शर्म से झुक गया है और समाज के हर तबके में यह जोर-शोर से चर्चा हो रही है कि ऐसी घटनाएं क्यों होती हैं और इन बीभत्स घटनाओं पर कैसे नियंत्रण पाया जा सकता है। लोगों को यह जानकर आश्चर्य हुआ है कि बलात्कार और यौन उत्पीड़न जैसी घटनाओं में प्रतिवर्ष मुश्किल से पांच प्रतिशत अपराधियों को सजा मिल पाई है। परंतु किसी ने यह पता लगाने का प्रयास नहीं किया है कि आखिर ऐसा होता क्यों है? सच यह है कि बलात्कार और यौन उत्पीड़न के मामले में न तो पुलिस का और न गवाहों का रवैया सहयोगपूर्ण रहा है। जो महिलाएं हिम्मत कर पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज कराने जाती हैं उनकी एफआईआर आसानी से दर्ज नहीं होती है और जब दर्ज होती है तो पीड़ितों से बहुत ही भद्दे प्रश्न पूछे जाते हैं। आरोपी गुनाह कर फरार हो जाते हैं। उनके फरार होने में अधिकतर मामलों में पुलिस की मिलीभगत रहती है। यदि महीनों बाद संयोग से वे पकड़ में आ भी जाते हैं तो पुख्ता सबूतों के अभाव में उन्हें आसानी से जमानत मिल जाती है। फिर तो वे और उनके गुंडे पीड़ित महिला और उसके परिवार के लोगों को डराते-धमकाते हैं और बाध्य करते हैं कि वे अपना मुकदमा वापस ले लें। अनुभव से यह पाया गया है कि पूरे देश में खासकर उत्तर भारत में और उसमें भी हिंदी भाषी क्षेत्र में पुलिस की आरोपियों के साथ मिलीभगत होती है। वे निष्पक्ष होने का स्वांग रचते हैं तथा पीड़िता और उसके परिवार के लोगों को डरा-धमका कर मुकदमा वापस लेने की सलाह देते हैं।

आजकल

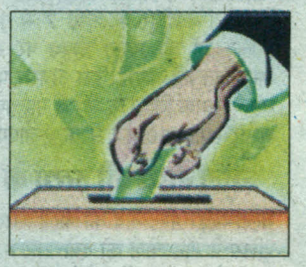

यदि कोई पीड़िता हिम्मत कर कोर्ट में जाती है तो वहां उसे वर्षों चक्कर लगाने पड़ते हैं। आरोपी पक्ष के वकील उससे भरी कोर्ट में बहुत ही भद्दे प्रश्न पूछते हैं जिसे पीड़िता और उसके परिवार के लोग बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं। वकीलों का एक सूत्रीय कार्यक्रम होता है पैसा कमाना और वे जानबूझकर लंबी-लंबी तारीखें ले लेते हैं जिससे पीड़िता या उसके परिवार के लोगों को भयानक परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

इस बीच हर सुनवाई के बाद पुलिस पीड़िता के परिवार वालों को यह सलाह देती रही है कि कुछ दे-लेकर समझौता कर लिया जाए। दूसरों का उदाहरण देकर वे यह समझाते हैं कि ऐसे मामलों में मुकदमा वर्षों चला और पीड़ित युवतियों की समाज में भयानक बदनामी हुई और फिर उनका अच्छी जगह विवाह नहीं हो सका। सही अर्थ में पुलिस उन गुंडों के साथ भीतर से मिली रहती है जो इस तरह के जघन्य अपराध करते हैं।

यह बात कम लोगों को मालूम है कि इस तरह के जघन्य अपराध करने वाले गुंडों को राजनेता संरक्षण देते हैं। यह एक तरह का मकड़जाल है जिससे निकल पाना बहुत ही कठिन है। राजनेताओं को अपना चुनाव जीतने के लिए तथा विकास के मद से पैसा लूटने के लिए गुंडों की जरूरत होती है। ये राजनेता इंजीनियरों और दूसरे अफसरों को डरा-धमकाकर विकास का अधिकतर पैसा मार जाते हैं। इन गुंडों की मदद से ही वे इंजीनियरों और अफसरों को डराते-धमकाते रहते हैं। देखा यह गया है कि जो इंजीनियर और अफसर इन राजनेताओं की बात नहीं मानते हैं उनकी ये गुंडे देर-सबेर हत्या कर देते हैं। पुलिस सब देखकर भी अनजान बनी रहती है। क्योंकि अपनी ट्रांसफर और पोस्टिंग के लिए उसे राजनेताओं पर आश्रित होना पड़ता है।

पुलिस में ऊपर से नीचे तक कितना भ्रष्टाचार है इसकी कहानियां रोज समाचारपत्रों में प्रकाशित होती हैं। कहा तो यह जाता है कि पुलिस निचले स्तर से पैसा कमाकर छुटभैये नेताओं को पैसा भेजती है और फिर यह पैसा बड़े राजनेताओं तक पहुंचता है। इसमें कितना सच है कहना कठिन है। राजनेता आए दिन पुलिस के काम में हस्तक्षेप करते रहते हैं। यदि किसी राजनेता का कोई चमचा गिरफ्त में आ जाता है तो राजनेता फोन कर उसे छोड़ देने का आदेश देते हैं। ऐसी हालत में पुलिस भी क्या करे? ऐसा लगता है कि पूरा शासनतंत्र विषाक्त हो गया है। कोई कहां से आरंभ करे और कहां अंत करे जिससे समस्या का अंत हो सके।

जब से गत 16 दिसंबर की घिनौनी घटना घटी है सभी राष्ट्रीय नेता बढ़-चढ़कर कह रहे हैं कि वे आगामी चुनाव में बलात्कारियों और ऐसे लोगों को टिकट नहीं देंगे जिन पर यौन उत्पीड़न का आरोप है। इन बयानों पर विश्वास करना बहुत ही कठिन है। पहले भी ये राजनेता कहते रहे हैं कि चुनाव में वे अपराधियों को टिकट नहीं देंगे। परंतु जब चुनाव नजदीक आता है तो वे खुलकर दुर्दांत अपराधियों को टिकट दे देते हैं। इन अपराधियों के पास गलत तरीके से कमाया हुआ अकूत धन होता है जिसके सामने कोई ईमानदार उम्मीदवार टिक ही नहीं सकता है। इसीलिए संसद में और विधानसभाओं और विधानमंडलों में अपराधियों की भरमार है। अब प्रश्न यह है कि इस व्यवस्था में सुधार कैसे लाया जाए? गत 16 दिसंबर की घटना के बाद हजारों युवाओं ने विजय चौक और इंडिया गेट पर पुलिस की लाठी सहकर और भयानक जाड़े में 'वाटर केनन' की बौछार सहते हुए जो प्रदर्शन किया, वह अभूतपूर्व था। इससे एक सीख तो मिलती है कि यदि राजनेता अपने को बदल नहीं सके और चुनाव प्रणाली में आवश्यक संशोधन कर अपराधियों को चुनाव प्रक्रिया से बाहर नहीं निकाल सके तो ये युवा उन्हें सबक सीखा देंगे। वे विभिन्न पार्टियों को इस बात के लिए बाध्य कर देंगे कि बदले हुए समय में अब गुंडों की नहीं चलेगी। अतः समय रहते स्वच्छ छवि के लोगों को चुनाव में उतारा जाए। समय आ गया है जब हमारे नेता दीवार पर लिखी इबारत पढ़ें और समझें।